



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4  
PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 12]

नई दिल्ली, मंगलवार, सितम्बर 9, 1986/भाद्रपद 18, 1908

No. 12]

NEW DELHI, TUESDAY, SEPTEMBER 9, 1986/BHADRA 18, 1908

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके

Separate Page is given to this Part in order that it may be filed as  
a separate compilation

वी इन्स्टीट्यूट ऑफ कम्पनी सेक्रेटरीज ऑफ इंडिया

(कम्पनी सचिव अधिनियम, 1980 के अधीन गठित)

[कम्पनी सचिव (संशोधन) विनियम, 1986]

(सितम्बर, 1986 का नम्बर 101 एन आई सी -1)

नई दिल्ली, 9 सितम्बर, 1986

सं. 710(2)(एम)(1)।—कंपनी सचिव अधिनियम, 1980 (1980 का 56) की धारा 39 की उपधारा (3) के भाग पठित उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करत हुए, भारतीय कंपनी सचिव संस्थान की परिषद् द्वारा प्रस्तावित कंपनी सचिव (संशोधन) विनियम, 1986 का निम्नलिखित प्राप्ति, इन विनियमों से प्रभावित होने वाले व्यक्तियों की जानकारी के लिए, प्रकाशित किया जाता है तथा एतद्वारा सूचना दी जाती है कि इन प्रविस्तृतता की तारीख में 45 दिन पश्चात् प्राप्ति पर विचार किया जायेगा।

उपरोक्त प्राप्ति के संबंध में विनिर्दिष्ट तारीख से पूर्व किंवा भी व्यक्ति से प्राप्त आक्षेप या सुझाव पर दि इन्स्टीट्यूट ऑफ कंपनी सेक्रेटरीज ऑफ इंडिया की परिषद् द्वारा विचार किया जायेगा।

प्रस्तावित विनियम

1. इन विनियमों का संक्षिप्त नाम कंपनी सचिव (संशोधन) विनियम, 1986 है।

2. इन विनियमों में जमा धन्यता उपबंधित है उसके विषय, ये विनियम भारत के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होंगे।

773 GI/86

3. कंपनी सचिव विनियम, 1982 के विनियम 48 (जिन्हें इसमें इसके पश्चात् उक्त विनियम कहा गया है) :-

(क) उपविनियम (1) में "संस्थान की अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले प्रत्येक अभ्यर्थी से" शब्दों के स्थान पर "उपविनियम (3) के उपबंधों के अधीन रहते हुए प्रत्येक अभ्यर्थी से (जिनके अंतर्गत नए सिने में रजिस्ट्रीकृत अभ्यर्थी भी हैं) जो 16 सितंबर 1982 को या उसके पश्चात् विद्यार्थी के रूप में रजिस्ट्रीकृत हुआ है और जिसने संस्थान की अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है तथा ऐसे प्रत्येक अभ्यर्थी से जो 16 सितंबर, 1982 से पहले विद्यार्थी के रूप में रजिस्ट्रीकृत हुआ है और जिसने विनियम 50 में विनिर्दिष्ट व्यावहारिक प्रशिक्षण संस्थान की अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण करने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि में पूर्ण नहीं किया है," शब्द रखे जाएंगे।

(ख) उपविनियम (2) के पश्चात्, निम्नलिखित उपविनियम अंतःस्थापित किया जाएगा :-

"(3) ऐसे किसी व्यक्ति के बारे में, जो 16 सितंबर, 1982 को या उसके पश्चात् और 29 दिसम्बर, 1985 तक (जिसमें वह तारीख भी सम्मिलित है) विद्यार्थी के रूप में रजिस्ट्रीकृत हुआ है, यह मंजूर जाएगा कि उसने इस विनियम में विनिर्दिष्ट व्यावहारिक अनुभव संबंधी प्रयोजनों की पूर्ति कर दी है, यदि उसने अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण करने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के भीतर

उपविनियम (1) के खंड (क) के उपखंड (1) में विनिर्दिष्ट रीति में या 30 दिसंबर, 1993 के पूर्व, दोनों में से जो भी पूर्वमर हो, किसी कार्यपालक के रूप में कार्य करने का अनुभव ओ एक वर्ष से कम का नहीं है, प्राप्त कर लिया है।

परन्तु परिपक्व इस अवधि को अधिकतम दो वर्ष की अवधि के लिए विस्तारित कर सकेगी, जिसके कारण लेखबद्ध किये जाएंगे।”

4. उक्त विनियम के विनियम 50 में, “व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने” शब्दों के पश्चात्, “जहाँ लागू हो”, शब्द प्रस्तापित किए जाएंगे।

परिषद् के आदेशानुसार,

टी. पी. सुब्बारामन, सचिव एवं कार्यकारी निदेशक

स्पष्टीकरण टिप्पण

व्यावहारिक अनुभव और प्रशिक्षण विषयक अपेक्षाओं से संबंधित विनियम 30-12-1985 से संशोधित कर दिए गए हैं, [कंपनी सचिव (संशोधन) विनियम, 1985 देखिये]।

वर्ष 1985 में किए गए संशोधनों के परिणामस्वरूप, संस्थान की प्रतिम परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले सभी अभ्यर्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे विनियम 48 और 50 में यथा अधिकतम व्यावहारिक अनुभव और व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करें।

वर्ष 1985 के संशोधन से पूर्व, 16 सितंबर, 1982 के पूर्व विद्यार्थी के रूप में रजिस्ट्रीकृत अभ्यर्थी से यह अपेक्षा नहीं की जाती थी कि उनके पास कोई व्यावहारिक अनुभव हो और उनसे यही अपेक्षा की जाती थी कि वह केवल 4 मास का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करें।

16 सितंबर, 1982 से विद्यार्थी के रूप में रजिस्ट्रीकृत किसी अभ्यर्थी के बारे में भी यह समझा जाता था कि उनमें व्यावहारिक अनुभव संबंधी अपेक्षाओं की पूर्ति कर दी है यदि उसके पास किसी कंपनी के, जिसकी समाप्त पूंजी पचीस लाख रुपये से कम नहीं है, संचालिक, प्रशासनिक, विधि, कामिक, वित्त या लेखा विभाग का, किसी पर्यवेक्षी हस्तियत में एक वर्ष का व्यावहारिक अनुभव है।

उक्त दो प्रयोगों के अंतर्गत वाले अभ्यर्थियों से इस बात बहुत से अभ्यावेदन प्राप्त हुए हैं कि वर्ष 1985 में किए गए संशोधनों का उन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है और यह कि उनसे अपेक्षा की गई है कि वे वर्ष 1985 के संशोधन से पूर्व यथा विद्यमान व्यावहारिक अनुभव और व्यावहारिक प्रशिक्षण संबंधी अपेक्षाओं की पूर्ति करें।

अतः कि व्यावहारिक अनुभव और व्यावहारिक प्रशिक्षण संबंधी अपेक्षाओं का संबंध है प्रस्तावित संशोधनों का उद्देश्य पूर्ववर्ती विद्यार्थियों की बाबत यथापूर्व स्थिति बहाल करना है।

## THE INSTITUTE OF COMPANY SECRETARIES OF INDIA

(Constituted under the Company Secretaries Act, 1980)

The Company Secretaries (Amendment) Regulations, 1986

(ICSI No. 1 of September, 1986)

New Delhi, the 9th September, 1986

No. 710(2)(M)(1).—The following draft of the Company Secretaries (Amendment) Regulations, 1986 proposed to be made by the Council of the Institute of Company Secretaries of India in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of

section 39 of the Company Secretaries Act, 1980 (56 of 1980) read with sub-section (3) thereof is published for information of persons likely to be affected thereby and notice is hereby given that the draft will be taken up for consideration after the expiry of 45 days from the date of its notification.

Any objection or suggestion which may be received from any person with respect to the said draft, before the dates specified, will be considered by the Council of the Institute of Company Secretaries of India.

## DRAFT REGULATIONS

1. These regulations may be called “The Company Secretaries (Amendment) Regulations, 1986”.

2. Save as otherwise provided in these regulations, these regulations shall come into force from the date of their publication in the Gazette of India.

3. In regulation 48 of the Company Secretaries Regulations, 1982 (hereinafter referred to as the said regulations) :—

(a) in sub-regulation (1), for the words “Every candidate passing the Final examination of the Institute”, the words “Subject to the provisions of sub-regulation (3), every candidate registered as a student on or after the 16th September, 1982 (including a student registered de novo) and passing the Final examination of the Institute and every candidate registered as a student before the 16th September, 1982 who has not completed practical training referred to in regulation 50 within a period of three years after the date of passing the Final examination of the Institute”, shall be substituted;

(b) after sub-regulation (2), the following sub-regulation shall be inserted, namely :—

“(3) Any person registered as a student on or after the 16th September, 1982 and up to and including 29th December, 1985 shall be deemed to have complied with the practical experience requirement specified in the regulation if he possesses not less than one year's experience as an executive in the manner specified in sub-clause (i) of clause (a) of sub-regulation (1) within a period of three years after the date of passing the Final examination or before 30th December, 1993, whichever is earlier.

Provided that the Council may, for reasons to be recorded in writing, further extend this period upto a maximum of two years.”

4. In regulation 50 of the said regulations, after the words “In addition to acquiring practical experience” the words “where applicable” shall be inserted.

By Order of the Council,  
T. P. SUBBARAMAN, Secy.  
& Executive Director.

---

**EXPLANATORY NOTE**

Regulations pertaining to Practical experience and training requirements were amended w.e.f. 30-12-85 vide Company Secretaries (Amendment) Regulations, 1985.

Consequent upon the amendments made in 1985, all candidates passing the final examination of the Institute are required to possess practical experience and undergo practical training as laid down in Regulations 48 and 50.

Prior to the 1985 amendment, a candidate registered as a student before 16th September, 1982 was not required to possess any practical experience and was required to undergo four months practical training only.

Also a candidate registered as student w.e.f. 16th September, 1982 and before 30-12-1985 was deemed

to satisfy the practical experience requirements if he possessed one year practical experience in a supervisory position in the secretarial, administrative, legal, personnel, finance or accounts departments in any company having a paid-up capital of not less than rupees twenty five lakhs.

There have been many representations from candidates falling under the above two categories that the amendments made in 1985 have adversely affected them and that they should be provided reasonable time and opportunity to comply with the requirements relating to practical experience and practical training as existed prior to the 1985 amendments.

The proposed amendments seek to restore the status quo ante to the students registered earlier to 30-12-1985 as regards the practical experience and practical training requirements.

